भाषा की शिक्षक, शिक्षार्थी सम्बन्ध में भूमिका

मानव मन के विकास की आधार शिला भाषा है। यह मनुष्य के सांस्कृतिक मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक, शैक्षणिक आदि विकासों का स्त्रोत है। इससे मानव जीवन निखरता है। ज्ञानार्जन के लिए भाषा अति आवश्यक है। भाषा वह प्रकाश है जिसने असभ्यता और अज्ञान के अन्धकार को चीर कर सभ्यता और ज्ञान का पथ आलोकित किया है।

भाषा के बिना शिक्षा की प्राप्ती या अध्यापन कार्य शिक्षक या शिक्षार्थी सोच भी नहीं सकते।भाषा के बिना कोई भी शैक्षणिक कार्य नहीं हो सकता। शिक्षा नहीं तो जीवन में जीवतता नहीं,विकास नहीं। शिक्षक और शिक्षार्थी भाषा के माध्यम से अपने जीवन को आलोकित करते हैं।शिक्षार्थी को जिस तरह से भाषा की ध्वनियों, मात्राएं, लिपि, वाक्य विन्यास आदि तत्वों के बारे में समझाया जाता है। विद्यार्थी के लिए वह अनुकरणीय होता है।

इसलिए शिक्षक को स्वयं भी भाषा की जानकारी रखना आवश्यक है। भाषा शिक्षक भाषायी शिक्षण विधियों से सरल व मनोवैज्ञानिक तरीके से भाषायी ज्ञान सिखा सकता है। इस तरह से शिक्षार्थियों में भाषा अधिगम में कठिनाई का अनुभव नहीं होगा। शिक्षक भाषायी कौशलों पर भी ध्यान देगा तो विद्यार्थी निपुणता हासिल करते हुए वही भाषा माध्यमिक व उच्च कक्षाओं को शिक्षा माध्यम भी रख सकता है। तो शिक्षक द्वारा किसी तरह से भाषा के ज्ञान देने में अवहेलना नहीं करनी चाहिए। इस तरह करने से शिक्षार्थी की समूची शिक्षा ही प्रभावित हो सकती है। यदि किसी शिक्षार्थी की भाषा ही सम्पुष्ट नहीं तो इसका प्रभाव अन्य विषयों सामाजिक, विज्ञान, भूगोल इत्यादि पर भी पड़ेगा। इस कुप्रभाव से बचने के लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी को शैक्षणिक दृष्टिकोण के लिए अपने सम्बन्ध गहरे व नज़दीक रखने होंगे। भाषा-शिक्षक को शिक्षार्थी को भाषा सीखाने के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों को समक्ष रखना होगा।

(क) भाषायी शिक्षक द्वारा निर्धारित शिक्षार्थी की भाषा अधिगम उद्देश्यः भाषा विचार विनिमय का सर्वोत्तम साधन है। शिक्षक जब शिक्षार्थी को भाषायी कौशल से अवगत कराता है. तो उन्हें कितनी प्रकार की कठिनाईयां होती है। ये भाषायी कठिनाईयां धीरे-धीरे दोषों में बदल जाती है और यह दोष जीवन पर्यन्त चलते है। तो शिक्षक शिक्षार्थियों की इन कठिनाईयों को परखता है। जिस शिक्षार्थी में जिस तरह की भी कठिनाई है उसे दूर करता है।

शिक्षक द्वारा निम्न प्रकार की कठिनाईयों को जानना आवश्यक है:

1.ग्राह्य सम्बन्धी

2. बोलने (उच्चारण) सम्बन्धी

3. वाचनसंबंधी

4.लेखनसंबंधी

'भाषा' शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। यदि विद्यार्थी भाषा सम्बन्धी दोष लेकर शिक्षा संस्था से बाहर आते हैं तो शिक्षक के लिए भी यह बड़ा आयात होगा।

1.भाषायी कौशलः श्रवण, बोलना, पढ़ना, लिखना भाषा अधिगम के लिए आवश्यक क्रम है। भाषा सीखने में प्रथम स्थान श्रवण कौशल का है। यह अन्य कौशलों के विकास का आधार है जो ठीक प्रकार से सुनते नहीं वह भाषा ज्ञान से अनभिज्ञ रहते हैं। यदि शिक्षार्थी को ध्यानपूर्वक सुनना, सुनी हुई बातों को समझने का अभ्यास न हो तो वह भाषायी कार्य जैसे बोलना पढ़ना, लिखना नहीं कर सकता। इसलिए अध्यापक अपने विद्यार्थियों के सन्मुख शुद्ध उच्चारण करे।

दूसरा कौशल मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य को पूरा करना आवश्यक होता है। मौखिक कार्य भाषा की नींव तैयार करता है। मौखिक अभिव्यक्ति से विद्यार्थियों के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध किया जाता है।प्राथमिक स्तर से ही मौखिक भाषा की शिक्षा पर ध्यान देकर उनकी अभिव्यक्ति में स्पष्टता, शुद्धता,मधुरता, सुबोधता इत्यादि गुणों का विकास किया जाता है।

तीसरा महत्वपूर्ण कौशल पढ़ना (पठन) कौशल है। लिपिबद्ध शब्दों को पढ़ कर अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया वाचन कहलाती है। शिक्षक प्राथमिक कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं तक पठन प्रक्रियों को लगातार चलाता है। शिक्षक इस उद्देश्य के लिए विद्यार्थियों को अक्षरों, शब्दों का ज्ञान करवाना और शुद्ध उच्चारण एवं उचित उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ सकने की योग्यता के लिए प्रयास करते रहना आवश्यक है। पठन योग्यता विकसित के अभाव में जीवन के हर क्षेत्र में कठिनाईयां आती हैं।

चौथा कौशल लेखन का जीवन में बहुत महत्व है। मौखिक अभिव्यक्ति या पठन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। विद्यार्थियों को अक्षरों की सुन्दर सुडौल तथा स्पष्ट बनावट सिखाकर उनमें लेखन की प्रवृत्ति का विकास किया जाना भाषायी शिक्षक का उद्देश्य होता है।

भाषा शिक्षक को उपर्युक्त भाषायी उद्देश्यों को सामने रखकर अपना शिक्षण कार्य में नियोजित भूमिका अपनाने की आवश्यकता रहती है। इसके अतिरिक्त अन्य उद्देश्य भी सन्मुख रख अपने शिक्षण कार्य को जारी रखा जाए जिनका विवरण निम्नानुसार है:

2. व्यक्तित्व विकासः भाषा के प्रभावशाली प्रयोग से विद्यार्थी के व्यक्तित्व की समाज में छाप पड़ती है।सभी शिक्षा मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों इस बात पर सहमति प्रगट करते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वोन्मुखी विकास है। इस लक्ष्य की पूर्ति में सबसे अधिक भूमिका भाषायी शिक्षक की हो सकती है। भाषा का महत्व केवल बौद्धिक विकास में ही नहीं बल्कि चारित्रिक विकास में भी है।

3. शारीरिक विकासः भाषायी शिक्षक लिपि-ध्वनियों को स्पष्ट करता है तो ध्वनियां शिक्षार्थी के मस्तिष्क में अंकित हो जाती है तो उसके स्वर तंत्रियों के विकास में सहायक होती है। शिक्षक को इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि शिक्षार्थी की स्वतंत्र का विकास ठीक ढंग से हो और वह स्पष्ट ध्वनि निकाल सके। धीरे-धीरे यह स्वतंत्रियों विकसित हो बोलचाल को स्पष्ट करती है। यदि इस उद्देश्य को सन्मुख नहीं रखा जाएगा तो जीवन पर्यन्त अस्पष्ट ध्वनियों का कुप्रभाव उसके शरीर पर पड़ेगा।

4. मानसिक एवं बौद्धिक विकासः मानसिक विकास से विचार शक्ति प्रबल होती है। जितना मानसिक योग्यता को समझा जाएगा और उसके विकास पर ध्यान दिया जाएगा। उन ही बौद्धिकता के उद्देश्य को सरलता से पाया जा सकता है। भाषायी शिक्षक भाषा और भाद के महत्व को समझते हुए उसके मानसिक विकास एवं बौद्धिक विकास के प्रयत्न करता है। बुद्धि विचारों को जन्म देती है। मानसिक योग्यता से बुद्धि बढ़ती है और बुद्धि से अच्छे विचार। इस उद्देश्य को पाने के लिए भाषा की भूमिका आवश्यक है।

5. व्यावहारिक कार्य के विकासः व्यवहारिक कार्य के विकास का उद्देश्य का अर्थ है। एक शिक्षार्थी जीवन में बहुत से क्षेत्रों में कार्य कलाप करता है। जब तक एक शिक्षार्थी अपने कार्य क्षेत्र में सफल नहीं है, वह एक पढ़ा लिखा (साक्षर) नहीं माना जाता। जीवन में कई बार देखा गया कि भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग न करने पर कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः इसमें कोई भी शंका नहीं भाषा व्यक्ति को व्यवहार कुशल बनाती है। भाषायी कौशल के उद्देश्य (श्रवण, मौखिक अभिव्यक्ति पठन, लेखन) को पाने में

S.D. COLLEGE OF EDUCATION
KNOWLEDGE
VISION SUPREME
ज्ञानं चक्षुर्मनुष्याणाम

प्रयासरत रहने से ही दैनिक जीवन में कुशलता आती है। भाषायी शिक्षक की भूमिका इस दृष्टिकोण से भी अपेक्षित है।

6. ज्ञान के विकासः भाषा के अभाव में ज्ञान का विकास नहीं हो सकता। विद्यार्थी जितना ज्ञान प्राप्त करेगा। उतनी ही भाषा के विकास में सहयोगी रहेगा। भाषा एक ऐसा साधन है जो मनुष्य के ज्ञान और अनुभवों को संजो लेती है। भाषा ज्ञान का संग्रह करके व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है। भाषायी शिक्षण से विभिन्न क्षेत्रों जैसे इतिहास संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, विज्ञान के ज्ञान से शिक्षक अवगत करवाकर शिक्षार्थी के ज्ञान के विकास में भाषा बहुत बड़ी भूमिका निभाती है और शिक्षक और शिक्षार्थी के सम्बन्धों के विकास के भाषायी उद्देश्यों की पूर्ति होती रहती है।

7. अन्य उद्देश्यः भाषा एक ऐसा साधन है जो मनुष्य के आनन्दमय, प्रसन्नचित एवं उत्साहित उर्जावान करने में सफलतापूर्वक कार्य करती है। भाषायी शिक्षक यदि विद्यार्थियों को इस उद्देश्य को पाने के लिए मार्गदर्शन करे तो उनका शिक्षा के उद्देश्यों को पाने में बिल्कु कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। देश में प्रेम, राष्ट्रीय एकता और अंतर्राष्ट्रीय भातृभाव एवं चारित्रिक उद्देश्यों की प्राप्ति भी हो सकती है।विद्यार्थी उर्जावान रहेंगे तो तनाव मुक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। किसी भी भाषा में ऐसी रचनाओं की भरमार है जो मनुष्य को जिन्दा दिल रखती है। भाषा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सक्रिय भूमिका अपनाती है। हमारे देश के लोगों में लोकतांत्रिक गुणों का विकास हो अच्छे नागरिक पैदा करने में शिक्षक सहायक हो सके। जिससे उज्जवल समाज का निर्माण हो।

(ख) भाषा शिक्षक एवं शिक्षार्थी के सम्बन्धों में निम्नलिखित प्रकार से भूमिका निभाती है।

1.भाषायी कौशल सम्बन्धी भूमिका: शिक्षार्थी अपने जीवन काल में भाषा सीखने के लिए आतुर रहता है।भाषा अधिगम में एवं अन्य ज्ञान प्राप्ति में उसे सहजता रहे। यह काफी हद तक शिक्षक पर निर्भर करता है। शिक्षक को यह अवगत रहता है कि भाषा के ज्ञान के अभाव में शिक्षार्थी का जीवन अधूरा रहेगा वह अपने विचारों को प्रगट करने में असक्षम होगा तो वह सफल नहीं रहेगा। तो इस तरह भाषा की महत्ता को शिक्षक भी अच्छी तरह जानता है वह उसे उन भाषायी कौशलों जैसे श्रवण मौखिक अभिव्यक्ति,पठन, लेखन से अवगत व अभ्यास करवाता है। भाषा के माध्यम से शिक्षक व शिक्षार्थी का अटूट सम्बन्ध रहना चाहिए। शिक्षार्थी शिक्षक के बोलचाल से भाषा की शुद्धता, स्पष्टता को सीखता है एवं उसको अनुकरण

करता है। शिक्षक को चाहिए जो भी भाषा सीखता है। उसकी ध्वनियों की स्पष्टता उसे हो, शिक्षार्थी उसी तरह अनुकरण करे और अभ्यास करते हुए उच्चारण की शुद्धता और भाषायी योग्यता को प्राप्त कर सके।

इसी प्रकार लेखन कौशल के लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी की साकारात्मक भूमिका होनी चाहिए। शिक्षार्थी लेखन में सुडोलता, सुन्दरता लाने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देना चाहिए और अध्यापक सुन्दर लेखन से सृजनात्मक लेखन करवाने तक प्रयासशील रहना चाहिए।

2.सामाजिक भूमिकाः भाषा के ज्ञान के अभाव में शिक्षार्थी का सामाजिक जीवन अभिशाप बन जाता है। क्यों के भाषा के माध्यम से मनुष्य आवश्यकताओं को प्रगट करता है। और भावनाओं को प्रदर्शित करता है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी का सामाजिक विकास होता है। सामाजिक कार्य को करने के लिए विचार व्यक्त और दूसरों के विचार ग्रहण करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए भाषायी शिक्षक भाषा शिक्षण के लिए ऐसी शिक्षण विधियों एवं शिक्षण क्रियाओं का प्रयोग कक्षा में करता है जिससे शिक्षार्थियों में सामाजिक योग्यताओं का विकास होता है। इन विकसित योग्यताओं से जीवन में उनके मानवीय सम्बन्ध मजबूत होते. है। शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को भाषण प्रतियोगिताओं काव्य गोष्ठियों, एकांकी, नाटक इत्यादि खेलने के लिए उत्साहित करता है। इस तरह भाषा के माध्यम से पाठ सह क्रियाओं से सामाजिक गतिविधियों को विकसित करता रहता है।

3. शैक्षणिक भूमिकाः शिक्षार्थी के जीवन काल में शिक्षा उद्देश्य की प्राप्ति में भाषा का विकास उसके सफलता की कुंजी है। शिक्षक को चाहिए कि वह शिक्षार्थियों की भाषा पर एक ऐसी मजबूत पकड़ करवाएं कि उनकी लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति सरल स्पष्ट हो सके। दोनों प्रकार के उद्देश्य की दृष्टि में भाषा में शुद्धता व स्पष्टता दोनों ही गुण समान रूप से अपेक्षित है।

राइबन के अनुसारः शिक्षार्थी का अक्षम्य दोष अशुद्ध (व्याकरण विरुद्ध) भाषा ही नहीं अपितु अस्पष्ट भाषा है।

भाषायी शिक्षक के सम्मुख यह चुनौती होती है कि शिक्षार्थी को सरल, स्पष्ट, शुद्ध अभिव्यक्ति कैसे सिखाई जाए? मातृभाषा अधिगम के लिए यह कठिन कार्य नहीं होता परन्तु अन्य भाषाओं के शिक्षण में इस प्रकार की कठिनाई शिक्षक के सामने रहती है। शिक्षक भाषा सीखा कर शिक्षार्थी के शिक्षा काल में उसकी शिक्षा

के लिए यही भाषा माध्यम हो जाएं, यह उसको समपन्न करवा दें तो भाषायी शिक्षक ने तो मानो अपना जीवन ही कुर्बान कर दिया भाषा सिखाते हुए शिक्षक खूब साकारात्मक भूमिका निभाए और शिक्षार्थी खूब मेहनत करें जिससे शिक्षा माध्यम के लिए कोई भी चुनौती हो उसका सामना किया जा सके। शिक्षार्थी यदि भाषायी कौशलों में योग्यता पा ले तो अन्य विषय जैसे भूगोल विज्ञान, इतिहास आदि को सहज ही समझ लेगा। उसको अन्य विषयों में ज्ञानार्जन एवं अभिव्यक्ति सरल लगेगी। शैक्षणिक दृष्टि से भाषा के कौशलों में निपुणता होनी आवश्यक है।

4. साहित्यिक भूमिका:किसी भी भाषा का साहित्य उसके इतिहास के जन-जीवन का प्रतिबिम्ब होता है।भारत की प्रमुख भाषाओं का साहित्यिक महत्व है। हिन्दी भाषा की एक समृद्ध साहित्यिक परम्परा है।जिस भाषा में भी शिक्षार्थी साहित्य के पढ़ने में सहज होता है। शिक्षक उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करे।जिस भाषा में असहज होता है उसमें भी पढ़ने से वह उस भाषा के भाषायी कौशलों को प्राप्त कर धीरे-धीरे निपुणता से असहजता को मिटा सकता है। भाषायी अध्यापक को साहित्य में अच्छी-अच्छी रचनाओंके बारे में मार्गदर्शन करना चाहिए। साहित्य न केवल शिक्षार्थी के लिए पढ़ना आवश्यक है। शिक्षक की साहित्य पढ़ने के लिए आतुरता विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचियों को बढ़ाती है। शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को यह समझना चाहिए कि साहित्य तो सद्वृत्तियों, सामाजिकता, दर्शन, जीवन जीने की कला, राजनीति,आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों का पथ प्रदर्शक तथा अनेकों प्रकार की सूचनाओं का संग्रह होता है। जिसको पढ़कर शिक्षक एवं शिक्षार्थी अपने मार्ग को प्रशस्त तो करते हैं। दूसरे के मार्ग दर्शक के रूप में भूमिका निभाते हैं। शिक्षक को भाषा की पुस्तक में निर्धारित पाठ्यक्रम की कई कविताएँ, कहानियाँ, निबन्ध

इत्यादि शिक्षार्थियों को पढ़ाने होते हैं। इन्हें पढ़कर, अर्थ समझते हुए विद्यार्थियों की साहित्य में रुचि बढ़ती है। इस रुचि से शिक्षार्थियों का बौद्धिक व मानसिक विकास होता है। जिससे शिक्षक शिक्षार्थियों के लिए निर्धारित शिक्षा के लक्ष्यों की पूर्ति बिना किसी विशेष प्रयास के पा सकता है। यह साहित्य की शक्ति नहीं तो और क्या है? साहित्य पढ़ने से आत्मा को बड़ा बल भी मिलता रहता है।

5. अभिवृत्यात्मक भूमिकाः भाषा की शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के सम्बन्ध में अभिवृत्यात्मक भूमिका होती है। अभिवृत्यात्मक से यहाँ अभिप्राय है कि भाषा के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थियों में सद्वृत्तियों एवं सामाजिकता का विकास करता रहे। जैसे ऊपर भी कहा है कि जैसे-जैसे विद्यार्थी साहित्य पढ़ता जाता है उसमें सद्वृत्तियाँ पैदा होती है। शिक्षार्थी विवेकशील होकर सदमार्ग पर चलता है। हिन्दी साहित्य में ऐसे बहुत से महान ग्रंथ एवं पुस्तकें है जिसमें भारतीय संस्कृति का चित्रण बखूबी हुआ है जब विद्यार्थी इतने

सुन्दर संस्कृति को जानते है तो अपने आप को धन्य मानने लगते हैं खेद है हमारे विद्यालय के शिक्षक अपनी संस्कृति का गान नहीं करते माध्यमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों को भटकने से बचाने के लिए साहित्य की शरण में भेजने की बहुत ही आवश्यकता है। वह कुप्रवृतियों में फंसते नहीं इस प्रकार भाषा के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थियों में साहित्यिक रुचियां जागृत करता है और इनसे सदवृत्तियों का विकास

और भाषा शिक्षण की प्रणालियाँ विद्यार्थी सृजनात्मकता की और प्रेरित होते हैं।

6. सृजनात्मक भूमिका: किसी भी क्षेत्र में सृजनात्मकता की जा सकती है जैसे शब्दों एवं वाक्यों के सृजन से रचना बनती है। रंगों से, मिट्टी से पत्थर से एवं अन्य वस्तुओं से आकृतियां बनती है। इसी तरह सुन्दर विचारों से आत्म शक्ति को बल मिलता है। साहित्य में सृजनात्मकता भाषा ज्ञानार्जन से प्राप्त होती है। शिक्षक को शिक्षार्थियों में भाषा में सृजनात्मक विकास के लिए विशेष प्रयास करने पड़ते हैं। मौलिक लेखन के लिए शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करता है।

रायर्बन के अनुसार "जो कुछ पढ़ा या सुना गया है उसकी आवृत्ति सृजनात्मक कार्य नहीं है परन्तु इसके लिए ज्ञान का ठोस आधार तथा उन विचारों की पृष्ठभूमि आवश्यक है, जिन्हें मस्तिष्क अब तक आत्मसात कर चुका होता है। इस पृष्ठभूमि के आधार पर नई एवं मौलिक रचना करना ही सृजन है।"

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि सृजनात्मक लेखन से अभिप्राय साधारण लेखन या अनुवाद कार्य नहीं है। शिक्षक को शिक्षार्थी की रचनात्मक प्रतिमा के विकास के लिए अवसर प्रदान करके उसमें सृजनात्मक योग्यता विकसित करनी होती है। जिससे वह साहित्य के सृजन से समाज में पनपने वाली समस्याओं के प्रति झकझोड़ कर उन्हें दिशा प्रदान कर सके। शिक्षक भी साहित्य सृजन में योगदान डाल कर विद्यार्थियों को सृजन कार्य के लिए प्रेरित करता रहेगा। दोनों ही साहित्य सृजन से भावी पीढी को चिन्तन मनन में प्रवृत्त कर सही दिशा प्रदान करेंगे इस तरह से भाषा साहित्य द्वारा स्वस्थ समाज के निर्माण में भूमिका निभाती है।

7. राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना बनाने में भूमिकाः भाषा शिक्षक व शिक्षार्थियों में अच्छे संस्कार भरने में सक्षम होती है। भाषा ही आपस में जोड़ती है। भाषा के माध्यम से विचार विनियम, संस्कृतियों को जानने से राष्ट्रीय भावना पैदा होती है। इसी तरह भाषा के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थियों को अपने देश की सुदृढ़ परम्पराओं, आदर्शों, रीति-रिवाज़, त्योहारों, संस्कृतियों से अवगत करवाकर उनमें राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना भरता है। शिक्षक देश की आजादी के संघर्ष, बलिदानों की गाथाएं कविताएं शिक्षार्थियों को सुनाकर उनमें राष्ट्रीयता कूट- कूट कर भर सकता है।जितना राष्ट्र प्रेम आवश्यक है उतना अपने राष्ट्र विकास के लिए

अंतर्राष्ट्रीय होना भी आवश्यक है। हर देश का सम्मान या विकास से ही अपने देश का विकास सम्भव है। भलो गरीब पड़ोसी देश हमारे देश के विकास में क्या सहयोगी हो सकेगा। भाषा के शिक्षक इन सब बातों को शिक्षार्थियों में स्पष्ट करता चले और भारत की वसुधैव कुटुम्बकम का घोष और वैदिक संस्कृति को उजागर करे तो अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की भावना जागृत होगी। शिक्षक भाषा की विभिन्न विधाओं जैसे कहानी, निबन्ध, कविताओं से ऐसे विचारों को उनके मन में स्थापित कर सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मानव जीवन में भाषा की बहुत उपादेयता है। भाषा का सम्बन्ध त्रिकोणीय है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी व भाषा तीनों मिलकर मनुष्य व समाज को सुन्दर स्वस्थ बनाते है। शिक्षक यदि श्रम करवाने व शिक्षार्थी श्रम करने में पीछे न रहे तो भाषायी कौशल प्राप्त करने में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं तथा जीवन के हर क्षेत्र में सफल रह सकते है। शिक्षा का माध्यम, ज्ञानार्जन, समाज का विकास का साधन केवल भाषा है। यही नहीं दैनिक क्रियाकलापों में तो भाषा की तूती ही है। यह सिर चढ़कर बोलती है इसलिए शिक्षार्थी भाषा सम्बन्धी कठिनाईयों के सुधार में अनवरत लगा रहे जिस प्रकार डॉक्टर किसी रोग को दूर करने के लिए अनेकों प्रक्रियाओं का प्रयोग करता है उसी प्रकार शिक्षार्थियों की भाषा सम्बन्धी चुनौतियों के निवारणार्थ शिक्षक अनेक विधियों, प्रक्रियाओं एवं साधनों का प्रयोग करें।

KNOWLEDGE IS VISION SUPREME
ज्ञानं चक्षुर्मनुष्याणाम